Hindi Section

सिमटने लगी है अब भीमताल की भव्य झील

भीमताल झील जो कि नैनीताल जनपद में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी झील है तथा झील के मध्य स्थित प्राकृतिक टापू के कारण यह झील काफी प्रसिद्ध हैं, लेकिन झील में समाहित हो रहे मलबे के कारण झील की गहराई लगातार घटती जा रही है। जिससे झील की जल संग्रहण क्षमता में भी कमी आयी है। भीमताल झील समुद्र सतह से 1370 मीटर की ऊंचाई पर स्थित हैं। झील का क्षेत्रफल 85.3 हेक्टेयर तथा परिधी लगभग तीन किमी है। झील की लम्बाई 1677 मीटर तथा चौड़ाई 454 मीटर है। वर्ष 1871 में झील की गहराई जहां 39 मीटर थी, सन् 1975 में घटकर 27 मीटर तथा 1885 में घटकर 20 मीटर आंकी गयी। इस प्रकार झील की गहराई में प्रतिवर्ष कमी हो रही है। झील में लगातार मिट्टी भरते रहने से झील की औसत गहराई बीस मीटर से भी कम रह गयी है। झील के रखरखाव को लेकर दशम वित्त आयोग ने लगभग चार करोड़ की धनराशि से अधिक की एक महत्वाकांक्षी योजना स्वीकृत की थी जिसके तहत सीवर लाइन का निर्माण, झील से मलवा हटाना, झील के चारों ओर रेलिंग लगाना, झील के मध्य स्थित टापू का सौन्दर्यीकरण, झील के चारों ओर विद्युत व्यवस्था करना, झील के चारों ओर वृक्ष रोपित करना व झील के किनारे पार्किंग स्थल स्थापित करना थे। लेकिन इस महत्वाकांक्षी योजना कार्य खत्म हुए एक वर्ष से भी अधिक का समय हो गया, लेकिन झील की स्थिति सुधरने के बजाय और बदतर होती चली गयी है। झील जगह–जगह पोखरों में तब्दील हो गयी है तथा झील में समाहित होने वाले नालों की सफाई नहीं होने के कारण झील में मलवा लगातार समाहित होता जा रहा है। पर्यटन के साथ ही भीमताल झील हल्द्वानी व भावर क्षेत्र की पेयजल व सिंचाई का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, लेकिन जल संग्रह कम होने के कारण झील में पर्याप्त मात्रा में पानी संग्रहित नही हो पाता है। जिस कारण इन क्षेत्रों को भी समुचित मात्रा में पानी की आपूर्ति नही हो पाती है।

दैनिक जागरणः जून 27, 2002

घट रहा है मानसरोवर झील का आकार

हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिए पवित्र मानी जाने वाली मानसरोवर झील का आकार घट रहा है। लगभग 85 किमी0 की परिधि वाली इस झील का एक बड़ा भाग दलदल में बदल चुका है। हिन्दुओं के आदि देव शिव का निवास कैलाश पर्वत तिब्बत में पड़ता है। और इसी क्षेत्र में है पवित्र मानसरोवर झील। कहा जाता है कि हजारों वर्षो से मानसरोवर झील की स्थिति एक सी है। न्यून जनसंख्या और अत्यधिक ऊंचाई (लगभग 19000 फिट) वाले इस क्षेत्र में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या पिछले कुछ वर्षों तक नहीं थी। लेकिन इस वर्ष इस क्षेत्र में बड़ी तेज गति से पारिस्थितिकी में बदलाव आये हैं। लगभग 85 किमी0 परिधि वाली मानसरोवर झील का कुछ हिस्सा दलदल में बदल गया है। एक दशक पूर्व झील की परिक्रमा पूरी करने में जो समय लगता था आज उसकी तुलना में कम समय लगता है। पार्वती सरोवर का आकार भी एक छोटे से पोखर जैसा रह गया है। सरोवर के बड़े भाग में मिट्टी भर चुकी है। और यह कई अलग–अलग भागों में बंट चुका है। ऊँ पर्वत की पहचान ही ऊँ शब्द से होती है। इस पर्वत पर भले ही कही बर्फ बारहों मास रहती है। लेकिन इस वर्ष पर्वत ऊँ शब्द साफ नहीं दिख रहा है। इसकी पुष्टि कई यात्रियों और पर्यटकों ने की है। कुल मिलाकर इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी परिवर्तन हो रहे हैं। विश्व तापमान में हो रही बढ़ोत्तरी का असर यहां भी पड़ रहा है। यात्रियों और पर्यटकों द्वारा यहां फैलाया जाने वाला प्रदूषण भी एक कारण हो सकता है।

दैनिक जागरणः अगस्त 14, 2002

मिलने लगे हैं 'हिमयुग' की वापसी के संकेत

उत्तरांचल के कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सितम्बर के पहले सप्ताह में हुए हिमपात को जहां कुछ लोग 'प्री मेच्योर बेबी' की संज्ञा दे रहे है तो वहीं कई इसे हिमयुग की वापसी के संकेत के तौर पर भी देख रहे हैं।

हिमालय में अचानक सक्रिय हुए अल–निना (ठंडी करेंट) को भविष्य में मौसम के मिजाज में होने वाले अभूतपूर्व बदलावों से जोड़ कर देखा जा रहा है। उत्तरांचल सहित समूचे हिमालय के निचले स्थानों, यूरोप, रूस, चीन, नेपाल तथा दक्षिणी ध्रुव में इन दिनों मौसम में जो भारी उलटफेर देखने को मिल रहा है पर्यावरणविद उसे 'डीप फ्रिज' या 'हिमयुग' की वापसी के संकेतों से जोड़ कर देख रहे हैं। माना जा रहा है कि बारह हजार वर्ष के पहले आखिरी हिमयुग के बाद हिमालय तथा उत्तरी ध्रुव से पहली बार इतने व्यापक पैमाने पर बर्फ पिघल रही है। यही नहीं वर्ष 1980 के बाद से प्रकाश की गति कम होने से ब्लैक होल का क्षेत्र जिस तरह लगातार बढ़ रहा है वह भी इसी वापसी की ओर इशारा कर रहा है। हिमालय में हिमयुग की वापसी के जो संकेत सबसे ज्यादा मौसमविदों को चिंतित कर रहे हैं वह है दुनिया के जाने–माने ग्लेशियरविद प्रो0 लेनार्डो की दो महीने पहले तैयार की गई 'आइस कोर थ्योरी'। तिब्बत के सबसे बड़े ग्लेशियर जिम ब्यांग से लेनार्डो ने चालीस फीट की गहराई से आइस का टुकड़ा निकाल कर यह साबित किया है कि किस तरह हिमालयी क्षेत्रों में ठंडी करेंट (अल–निना) सक्रिय हो गई है। प्रो0 लेनार्डो के शोध का निष्कर्ष है कि अल–निना करेंट के कारण ही जिम ब्यांग ग्लेशियर का न केवल पिघलना रूका बल्कि इसके पीछे खिसकने की गति पर अंकुश लगा है। खबर है कि तिब्बत में प्रयोग के तौर पर किए इस परीक्षण को आने वाले दिनों में शीध्र ही उत्तरांचल के गोमुख सहित कई दूसरे हिमालयी ग्लेशियरों पर भी किया जाएगा। पर्यावरणविद् विपिन कुमार कहते हैं, यह सही है कि प्रो0 लेनार्डो की थ्योरी के बाद हिमालय में ठंडी करेंट के सक्रिय होने की बात सिद्ध हो गई है मगर इसे हिमयुग की वापसी से जोड़ कर देखना अभी जल्दबाजी होगी। उनका मानना है कि गंगोत्री ग्लेशियर का पिघलना अल–निना (ठंडी करेंट) के कारण ही गुजरे दो सालों से ठहरा हुआ है और जो आगे भी स्थिर रहेगा। मशहूर पर्यावरणविद डी0के0 मोहंती कहते हैं, सिर्फ हिमालय में बदल रहे मौसम से हिमयुग की वापसी होगी ऐसी नहीं है। इसके लिए पूरे विश्व का मौसम बदलेगा और जो बदल भी रहा है।

दैनिक जागरणः सितम्बर 17, 2002

मध्य हिमालय के औषधीय पौधों के अध्ययन को आठ करोड़ की चरक परियोजना

मध्य हिमालयी क्षेत्र में पाये जाने वाले औषधीय पौधों का अध्ययन रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने शुरू कर दिया है। इसके लिए आठ करोड़ रूपये की लागत वाली चरक परियोजना शुरू की गयी है। इसके तहत फिलहाल पांच पौधों का चयन किया गया हैं इनके प्रारम्भिक अध्ययन में मलेरिया उन्नमूलन के लिए महत्वपूर्ण तत्व मिले हैं। आयुर्वेद के जनक चरक के नाम पर शुरू की गयी इस परियोजना का उद्देश्य हिमालयी क्षेत्रों मे पाये जाने वाले औषधीय पौधों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना है, ताकि इनके औषधीय गुणों का पूरा उपयोग किया जा सके। यह कार्य रक्षा कृषि एवं अनुसंधान इकाई पिथौरागढ़, तेजपूर और लेह में किया जा रहा हैं। इस परियोजना के तहत औषधीय पौधों को हल्द्वानी, पिथौरागढ़ और जोशीमठ में उगाया जाएगा और इन तीनों का अलग–अलग जलवायु में उन पर प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। इधर सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाई जाने वाली जड़ी बूटी यर्सो–गम्बों का वैज्ञानिक अध्ययन रक्षा कृषि अनुसंधान इकाई ने शुरू कर दिया हैं। शीध्र ही इसके गुणों की जानकारी मिल जाएगी। इस बूटी की चीन में बेहद मांग बताई जाती है, लेकिन अभी तक भारत में इसके उपयोग की पूरी जानकारी नही हैं। पहली बार रक्षा कृषि अनुसंधान इकाई ने यर्सो गम्बों का वैज्ञानिक अध्ययन करने की पहल की हैं।

दैनिक जागरणः नवम्बर 21, 2002

वैज्ञानिकों के लिए चुनौती बनी शीशम में बीमारी

भारतीय वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के वैज्ञानिकों के लिए शीशम के वृक्षों में लगी गैनोडर्मा ल्यूसीडियम व फ्यूजेरियम बीमारियां एक चुनौती बन चुकी हैं। एक दशक से वे इन बीमारियों के वास्तविक कारण नहीं खोज पाए हैं, तकरीबन पांच हजार हेक्टेयर में खड़ा शीशम का जंगल गैनोडर्मा ल्यूसीडियम व फ्यूजेरियम बीमारियों की गिरफ्त में आने से तबाह होता जा रहा है। अगर समय रहते बीमारी का इलाज नहीं खोजा गया तो बहुत संभव है कि भविष्य में हमें उत्तरांचल के जंगलों में शीशम दिखाई ही न दें। तराई केन्द्रीय, तराई पूर्वी, तराई पश्चिमी, हल्द्वानी, देहरादून तथा हरिद्वार वन प्रभागों में तकरीबन पांच हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र में शीशम का उम्दा जंगल खड़ा है। हल्द्वानी वन प्रभाग में शारदा रेंज में तकरीबन 300 हेक्टेयर वन क्षेत्र में शीशम का प्राकृतिक ढंग से विकसित जंगल है। इसमें पांच से लेकर साठ साल तक की आयु के वृक्ष हैं। वैसे भी टनकपुर के शीशम की पूरे उत्तरांचल में मांग है। इस जंगल को भी बीमारी अपनी गिरफ्त में ले चुकी है और वृक्ष सूखने लगे हैं। पिछले एक दशक से शीशम गैनोडर्मा व ल्यूसीडियम बं बीमारी से हुए नुकसान का जायजा लिया। टीम ने शीशम के क्लोनल पौधे तैयार करने तथा बीमारी से ग्रस्त पेड़ के आगे खाई खोदने व कवक नाशक दवाइयां प्रयोग करने

की सलाह दी। इतने बड़े पैमाने पर क्लोनल पौध तैयार करने का काम वन महकमा कर नहीं पाया। बाकी दोनों तरीके अपनाने के बाद भी कोई बात नहीं बनी और आज बीमारी अपने प्रचंड रूप में है। एफआरआई के वैज्ञानिक आज भी यह बता पाने की स्थिति में नहीं हैं कि बीमारी का वास्तविक कारण क्या है। यदि एफआरआई के वैज्ञानिक जल्द इसमें लगी बीमारियों के वास्तविक कारण नहीं खोज पाए तो बहुत संभव है कि भविष्य में जंगल में शीशम का पौधा दिखाई ही न दें।

अमर उजालाः दिसम्बर, 18, 2002

हर्बल स्टेट में करोड़ों की जड़ी–बूटी बर्बाद

उत्तरांचल को हर्बल स्टेट बनाने के नाम पर भले ही राज्य की सरकार हर रोज नई–नई घोषणाएं कर रही है, मगर राज्य के चमोली जिले के नंदादेवी मृगविहार और पिथौरागढ़ जिले के अस्कोट मृगविहार परिक्षेत्र में काश्तकारों द्वारा उगाई गई एक करोड़ रूपये से अधिक की जड़ी–बूटी बर्बाद हो गई है। राज्य सरकार द्वारा निजी भूमि से जड़ी–बूटी के विदोहन के लिए सुप्रीम कोर्ट से अनुमति न लेने के चलते यह स्थिति पैदा हुई। राज्य के सर्वाधिक जड़ी–बूटी उत्पादन वाले उच्च हिमालयी क्षेत्र के काश्तकारों ने इस व्यवसाय से ही हाथ खींच लिए हैं। अविभाजित उत्तर प्रदेश सरकार ने 1998 में निर्णय लिया कि उत्तरांचल के पर्वतीय जिलों में जड़ी–बूटी व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए काश्ताकारों को जड़ी–बूटी उगाने की अनुमति दी जाए। इसे लाभकारी मानते हुए उत्तरांचल के पिथौरागढ़, चमोली, उत्तरकाशी, बागेश्वर, रूद्रप्रयाग आदि जिलो के ऊंचाई वाले क्षेत्रो में रहने वाले काश्तकारों ने जड़ी–बूटी उगाने के लिए भेषज संघ और वन विभाग कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराया। काश्तकारों को रायल्टी माफ कर देने से सरकार को किसानों द्वारा उत्पादित जड़ी–बूटियां आसानी से मिलने लगी। व्यवसाय को फलते–फूलते देख सैकड़ों काश्तकारों ने पारंपरिक खेती से किनारा कर लिया और जड़ी–बूटी उत्पादन के काम पर जुट गए। पिथौरागढ़ जिले के धारचूला और मुनस्यारी ब्लाक में सर्वाधिक जड़ी–बूटी पैदा होती है। इसके चलते कुमाऊं मंडल में इन दो ब्लाकों में जड़ी–बूटी उत्पादित करने वालों की संख्या बढ़ गई। गढ़वाल मंडल में भी चमोली जिले में सर्वाधिक जड़ी–बूटी उत्पादित होने लगी। अनुमान है कि राज्य में काश्तकार ही एक साल में 80 लाख से लेकर दो करोड़ रूपये तक की जड़ी–बूटी बेचने में कामयाब रहे। डेढ़ वर्ष पूर्व सुप्रीम कोर्ट द्वारा उत्तरांचल के चमोली जिले के नंदादेवी मृगविहार और अस्कोट मृगविहार क्षेत्र में पातन कार्य पर रोक लगा दी। इस रोक के बाद जंगलों में पैदा होने वाली जड़ी–बूटी का विदोहन बंद हो गया। कुछ समय बाद वन विभाग ने मृगविहार क्षेत्र के उच्च हिमालयी गांवों में काश्तकारों द्वारा उगाई जाने वाली जड़ी–बूटी के विदोहन को भी रोक दिया। पिछले एक वर्ष से इस क्षेत्र में उगाई गई सालम मिसरी, गंदरायण, कुटकी, जम्बू, सतवा, रीठा, सालमपंजा, जटामासी, कूठ अलीज आदि जड़ी–बूटियां खेत में बर्बाद हो रही हैं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद भले ही विदोहन पर रोक लगी है, मगर उत्तरांचल सरकार ने विदोहन की अनुमति लेने के लिए कोई प्रयास नहीं किए। उत्तरांचल को हर्बल प्रदेश बनाने का वायदा करने वाली राज्य सरकार ने भले ही इसके प्रचार–प्रसार को कई करोड़ की योजनाएं घोषित कर दी हैं, मगर काश्तकारों द्वारा उत्पादित जड़ी–बूटी की बर्बादी से सरकार की मंशा पर ही प्रश्नचिह्न लग गया हैं।

अमर उजालाः दिसम्बर, 19, 2002